भी अपना इंगलैण्डके स्टीव बैडलेको १५-११, १५-६ से

गौ चिकित्सा

०२.२

गुआबाओ सेमीफाइनलमें पराजित हो गया।

मोहन सिंह हाकी आजसे

नयी दिल्ली, ३ अक्तूबर (यू.)। १८ वर्षसे कम आयुके बालकोंकी अखिल भारतीय मोहन सिंह हाकी प्रतियोगिता यहांपर कलसे शुरू हो रही है।

आयोजकोंने बताया कि प्रतियोगितामें मणिपुर, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और पंजाबकी टीमें हिस्सा ले रही हैं। इसमें आस्ट्रेलियाकी स्कूली टीमके अलावा कुछ स्थानीय टीमें भी हिस्सा लेंगी। सर्वश्रेष्ठ ...र्शनके आधारपर इसमें पांच लड़कोंका चयन ...ायगा जिन्हें १०० रुपये मासिक छात्रवृत्ति ...ी।

...ट्रीय गैर ओलम्पिक चार नवम्बरसे

लखनऊ, ३ अक्तूबर (मा.)। द्वितीय राष्ट्रीय गैर ओलम्पिक खेलोंका आयोजन अब चारसे नौ नवम्बरतक अहमदाबादमें किया जायगा। गैर ओलम्पिक खेल महासंघके महामंत्री श्री सफदररजा जैदीने उक्त आशयकी जानकारी देते हुए बताया कि पहले यह प्रतियोगिता

ॐ महावीरी बूटी वैद्यक

गो-चिकित्सा

रचयिता

स्वर्गीय चौ० भागवत सिंह

प्रकाशक तथा चिकित्सक

चौ० कैलासपति सिंह

तृतीय संस्करण]   १–६–१९४९   [५००० प्रतियाँ

मूल्य ।=)

द्रष्टव्य

१—जो महाशय इस वैद्यक के सहारे दवा करना शुरु करें उनके लिए यह सूचना दी जाती है कि यदि रोग न पहचान में आवे तो एक रुपया भर काली मिर्च का चूर्ण, चार रुपया भर हल्दी का चूर्ण, एक पाव घी में मिलाकर पशु को पिला देना चाहिये, यह एक खुराक है। छोटे पशु को इसके आधा। इस दवा के देने से पशु को जितने रोग हैं उन सबों में लाभ करेगा बीमारी बढ़ने नहीं पायगी, इसके बाद रोग पहचान कर तब दवा देना चाहिये।

२—पशु के जितने रोग हैं, उनमें तिलवाढ़ा रोग बहुत भयंकर है, इस रोग के हो जाने पर यदि दवा न दिया जाय तो २४ घण्टे में पशु के मर जाने की सम्भावना बनी रहती है, इस रोग के नहीं पहचानने से पशु सैकड़े में पचास मर जाते हैं।

३—प्रायः सब रोग एक ही दो दिन में अच्छा हो जाता है किन्तु दमा, अन्तर्दाह और फुरिया रोगों के लिए सात आठ दिन दवा करनी चाहिये, जिससे रोग जड़ से नाश हो जाय।

४—कोयर (भोजन) सब बीमारी में छूट जाती है और पागुर (जुगाली) करना बन्द हो जाता है।

५—दवा शाम सुबह दोनों समय देनी चाहिये। इस वैद्यक में जो तौल लिखा गया है वह पक्का तौल है। जिस दवा में खुराक नहीं लिखी गयी है उसको पूरी खुराक समझना। छोटे पशु (१ माह से ६ माह तक) को आधी खुराक तथा उससे छोटे पशु (१ माह के अन्दर) को चौथाई देनी चाहिये। अवस्था तथा वजन के अनुसार इस मात्रा में अन्तर पड़ेगा। किसी दवा के देने में कुछ कम वा अधिक होने से कोई हर्ज नहीं है। एक रोग की कई-एक दवाइयाँ लिखी गयी हैं, उनमें से कोई एक करनी चाहिये, यदि किसी कारण-वश एक लाभ न करे तो दूसरी का प्रयोग करना चाहिये। यदि किसी वृक्ष की छाल न मिले तो उसके पत्ते से काम लें।

विषय-सूची

नोट :—पृष्ठ १४ की अन्तिम पंक्ति में कुछ टाइप इधर उधर हो गये हैं। उसे इस तरह पढ़िये – चूर्ण आध पाव गाय के घी में।

पृष्ठ १८ की २३ वीं लाइन में सिमरिक की जगह सिमरिख पढ़िये।

वक्तव्य

परम पिता परमेश्वर की अतीव अनुकम्पा से यह पुस्तिका तृतीय बार प्रकाशित हो रही है। मैंने केवल पशु मंगल और तथा जनित किसान-मंगल की प्रेरणा से ही इस छोटी-सी पुस्तिका को प्रकाशित करनेका प्रयास किया है। प्रचार की ही भावना से दो संस्करण की पुस्तिकायें मुफ्त वितरित की गई। इस संस्करण की पुस्तिका में कुछ विशेष संशोधन तथा अतिरिक्त विषयों का समावेश किया गया है जिससे इसकी आकृति की भी वृद्धि हुई है। द्रव्य अर्जन करने तथा ख्याति लाभ की भावना से नहीं बल्कि पशु-कल्याण-मानव-कल्याण की एकमात्र भावना से ही यह पुस्तिका प्रकाशित की जाती है। यदि जनता इससे किंचित भी लाभ उठाये तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा। पुस्तक के रचयिता के साथ उनके संरक्षण में मैंने पशु-चिकित्सा आरम्भ किया। उनके सत्ता इस वर्षों के अनुभव का लाभ मैंने उठाया। इसके साथ ही साथ मैं भी १९२४ से ही चिकित्सा कार्य करता रहा हूँ। इससे मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि ये दवायें अतीव गुणकारी सिद्ध हुई हैं।

स्वर्गीय चौ० भागवत सिंह, ग्राम सिंकठी, प्र० चैनपुर पोस्टआफिस भभुआ, जिला शाहाबाद (आरा) प्रांत बिहार ने गो उपकारार्थ अपनी मत्यनुसार दवाइयाँ लिखी हैं जो पुरी तरह आजमाई गयी हैं और फायदा तुरत करती है। सत्ताइस वर्ष लगातार दवा का प्रयोग करके एकहत्तर वर्ष की उम्र में उनका स्वर्गवास हो गया।

ये सब दवायें गो, भैंस, बकरी, भेड़ी, गदहा आदि सब घास, चरने वाले पशुओंको दिया जाता है।

प्रकाशक तथा चिकित्सक
कैलासपति सिंह, एखलसपुर,
भभुआ, शाहाबाद।

गो-चिकित्सा

पशु-स्वास्थ्य-रक्षा का उपाय

मनुष्य की भाँति ही पशु-शरीर पर भी रोग का प्रभाव पड़ता है इसलिये जिस प्रकार मनुष्य के स्वास्थ्य की रक्षा और रोग-निवारण करने के लिये सचेष्ट रहने की आवश्यकता है; उसी प्रकार पशुओं की स्वास्थ्य-रक्षा का सदा ध्यान रखना वांछनीय है। यदि पशु किसी बीमारी से पीड़ित देखा जाय तो उस बीमारी की निवृत्तिका उपाय करने में विलम्ब न करना चाहिये। साथ ही साथ बीमार पशु को नीरोग पशुओं से अलग रखने की व्यवस्था करना मुख्य कर्तव्य है। यदि अलग न रख सकें तो गोबर और मूत्र अवश्य बाहर फेंकवा देना चाहिये। दैवात् बीमार पशु मर जाय तो उसकी खाल उतरवा कर मांस और हड्डी को पृथ्वी में गाड़ दें और उस पशु-शाला में चूना छिड़ककर गंधक जला देना चाहिये। ऐसा करनेसे रोग दूसरे पशुओं में फैल नहीं पायँगे।

पशुओं की पाचन-शक्ति (जठराग्नि) बड़ी प्रबल होती है। इसलिये पशुओं को यत्नपूर्वक रक्खा जाय तो सहज ही में वे बीमार नहीं हो सकते। जिस तरह मनुष्य को शुद्ध वायु, शुद्ध जल और शुद्ध भोजन की आवश्यकता है उसी प्रकार पशुओं को भी शुद्ध वायु, जल तथा आहार की आवश्यकता है। पशुओं को अधिक सर्दी और अधिक गर्मी से तथा वर्षाकाल में भी अधिक वर्षा से बचाना चाहिये।

वायुसेवन—प्रायः लोग गौ एवं भैंस को एक ही स्थान पर रखते हैं, यह बहुत ही हानिकारक है, ऐसा करने से उनके पैरों में रस उतर आता है। दूध में भारीपन हो जाता है। उसमें जो शीघ्रपचने का गुण होता है, वह

जाता रहता है। इसलिये कम से कम थोड़ी देर के लिये जंगल (मैदान, वन) में छोड़ देना बहुत गुणकारी है। जंगल की निर्मल हवा और धूप लगने और इधर उधर घूमने से उसका मन प्रसन्न रहता है। किसी प्रकार की शीघ्र बीमारी नहीं हो पाती है। और उसके दूध में अधिक माखन भी निकलता है तथा पुष्टिकर और स्वास्थ्यकर होता है।

जलसेवन—अधिकांश बीमारियाँ दुर्गन्धित सड़े हुए जल के पीने से हुआ करती हैं। इसलिये स्वच्छ जल पिलाना चाहिये जिसमें किसी प्रकार की दुर्गन्ध न हो। यदि बहती हुई नदी का जल पीने को दिया जाय तो पशु बीमार नहीं होगा गौ या घोड़ा आदि को प्रतिदिन स्नान कराना ठीक नहीं है। सातवें, आठवें दिन स्नान करा दिया करें, और प्रतिदिन जो मिट्टी तथा गोबर उसके देह में लगी हो उसे कपड़े से साफ कर दिया करें। भैंस को प्रतिदिन स्नान कराना ठीक होता है। किन्तु गर्मी के दिनों में सभी पशुओं को स्नान कराना लाभकर है। दूध देने वाले सभी पशुओं के थनों को प्रतिदिन धोना चाहिये।

भोजन—जंगली घास स्वयं एक प्रकार की जड़ी बूटियाँ ही है, इस कारण से घास अधिक सुपाच्य तथा गुणकारी है। अतएव पशुओं का जंगल में चरना अति लाभप्रद है, दूध वाली गौ का दूध विशेष रासायनिक तथा स्वास्थ्यकर होता है। यही कारण है कि देश के जल, वायु और चारागाह की सुविधा के अनुसार पशु बलवान या निर्बल होते हैं। प्रायः विश्व के प्रत्येक देश में गो वंश पाया जाता है परन्तु भारतवर्ष में 'हरियाने' एवम् 'व्रज', तथा मद्रास के पशु बड़े हृष्ट-पुष्ट होते हैं। गौ का मुख्य भोजन घास है, जब घास नहीं रहती है तब ज्वार, बाजरा की कड़वी (छांटी) उर्द या जौ का भूसा खाने को दिया जाता है। जो गौ दूध देती है उसको ज्वार की कड़वी और गेहूँ का भूसा, तिल की खली मिलाकर दी जाती है। तिल की खली जाड़े की ऋतु में उपयोगी होती है। सरसों की खली गर्मी के दिनों में देनी चाहिये, यह ठंडक रखती है। तीसी की खली बीमारी की दशा में

बहुत लाभकारक होती है। दुग्धवती गौ को चने के छिलके देना उचित नहीं है। इससे दूध सूख जाता है, पशुओं को अधिक चारा दाना देने से अजीर्ण हो जाया करता है जिससे भयंकर बीमारी हो जाती है। गर्भवती गौ को अधिक खली आदि उत्तेजक पदार्थ खिलाने से मृगी आदि के रोग हो जाते हैं। आवश्यकता से कम चारा दाना मिलने तथा आवश्यक पौष्टिक तत्वों के मेल न रहने से भी बीमारी हो जाती है। प्रतिदिन नमक खिलाते रहने से जल्दी पशु बीमार नहीं पड़ते।

पशुशाला—जैसे मनुष्यों के लिये सुन्दर, सुदृढ़, स्वच्छ, हवादार मकानों की आवश्यकता होती है, उसी तरह पशुओं के लिये अच्छा हवादार मकान होना चाहिये, जिसमें हवा अच्छी तरह आती जाती रहे और सूर्य की किरणें पड़ती रहें। कहीं कहीं लोग एक ही कमरे में गौ, भैंस तथा बकरी आदि रखते हैं; ऐसा करने से बड़ी हानि होती है। क्योंकि हरएक पशु की प्रकृति भिन्न है। गौ सूखे स्थान पर रहना पसन्द करती है और भैंस कीचड़ और मिट्टी में रहना। लोग आलस्यवश जिस शाला में पशु बाँधते हैं, उसी के कोने में गोबर इकट्ठा करते हैं; जिससे वायु दूषित हो जाती है और पशु का स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है तथा मनुष्यों के ऊपर भी इसका प्रभाव बुरा पड़ता है। शाला में एक नाली का रहना बहुत जरूरी है जिससे मूत्र बाहर चला जाय। जिन कच्चे मकानों में पशु रहते हैं उनकी धरती में गढ़े होने से उनमें गोबर और मूत्र भर जाता है जिसमें कीड़े पड़ जाते हैं अतः उसको प्रति दिन निकाल कर सूखी मिट्टी या राख बिछा देनी चाहिये। बरसात का पानी या बौछार उस मकान में न आने पावे। शाला में चूहे या छछून्दर न रहने पावें, क्योंकि छछून्दर यदि दुग्धवती गौ के थनों से स्पर्शित हो जाय तो उसके विष के कारण थन छोटे पड़ जाते हैं और दूध कम आने लगता है अथवा दूध का नितान्त ह्रास हो जाता है। पशु-शाला के द्वार सदा खुले रहने चाहिये, जिससे वहाँ की दुर्गन्धित गैस निकलती रहे। इसी गैस को अँग्रेजी में कारबन डाई आक्साइड गैस कहते हैं, यह बहुत ही

प्राणघातक होती है। परन्तु जाड़े की रात और जिस समय हवा ठण्डी चल रही हो तब इन द्वारों को बन्द कर दें अथवा पर्दा डाल दें। और पशु को टाट या मोटे कपड़े की झूल उढ़ा दें।

महामारी के समय आवश्यक सावधानी:—

१—जिस समय जिस बीमारी का अधिक प्रकोप होवे उस समय उसी औषधि को प्रत्येक पशु को ४-५ दिन लगातार देने से बीमारी नहीं फैलेगी। जैसे चेचक के प्रकोप होने पर गाय के मट्ठा में नीम की पत्तियों को पीस कर पिलाने से लाभ होता है तो चेचक होने पर सभी पशुओं को यही दवा देनी चाहिये। इसी तरह हर रोग पर जो जो दवा लिखी गयी है वही दवा देनी चाहिये।

२—प्रति दिन नमक खिलाने से भी बीमारी जल्दी नहीं होती, किन्तु 'खुरहा' रोग तथा 'चेचक' के प्रकोप होने पर पशु को नमक नहीं खिलाना चाहिये।

३—पशुशाला की सफाई पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

कुछ विशेष बातें

१—पशु वंश सुधार—हमारे कृषि-प्रधान देश में पशुओं की संख्या में बहुत कमी होने से राष्ट्र की बहुत क्षति हो रही है। इसलिये, वंश बढ़ाने के लिये जनता को भी हृष्ट-पुष्ट साँड़ से गौ को लगाना चाहिये। जिससे बछड़े हृष्ट-पुष्ट होवें। किन्तु बड़ी गाय के लिये बड़ा साँड़ और छोटी गाय के लिये मध्यम साँड़ का संयोग होना चाहिये।

२—मरे पशु के चमड़े का प्रयोग—देश आर्थिक दृष्टि से गरीब है इसलिये जो पशु मर जाय उसके चमड़े को जूते आदि के काम में लावें। मांस और हड्डी को जमीन में गाड़ देवें अथवा दूर फेंक देवें। जब मांस सड़ कर खाद हो जाय तो हड्डी को बाहर निकालें। प्रायः निम्नश्रेणी के लोग मृतक पशु का मांस खाते हैं, यह कार्य सामाजिक एवं स्वास्थ्य की

दृष्टि से बहुत ही बुरा है। मरे पशु को जल में भी नहीं बहवाना चाहिये, इससे पशुओं और जन-समुदाय में तरह-तरह की व्याधियाँ फैलती हैं।

३—हड्डी से उत्तम खाद बनाना—हड्डी को जमीन से निकाल कर पिसवा लें और खेत में डाल दें, इस खाद से उपज अधिक होती है।

४—गोबर से खाद बनाने की विधि—गढ़ा बनाकर गोबर या कूड़ा-करकट आदि को उसी गढ़े में असाढ़ माह से लेकर कुआर तक फेंकता जावे और उसी में थोड़ा थोड़ा खारा नमक छिड़कता जावे। बाद कुआर के उस गढ़े को मिट्टी से ढँक देवे और दूसरे तीसरे साल खेत में डालें।

श्वास-क्रिया, नाड़ी-ज्ञान तथा चिकित्सकों की सम्मति

१—स्वस्थ पशुओं की श्वास-क्रिया प्रायः १ मिनट में १०–१२ वार तक होती है, विशेष अधिक वा कम होना बीमारी का पहचान है।

२—गुह्य-स्थान वा योनिद्वार में तीन चार मिनट क्लिनिकल थर्मामिटर को रखने से स्वस्थ-पशु के शरीर की गर्मी साधारणतः १०१° से १०४° डिग्री तक होती है। १००° डिग्री से नीचे सर्दी हो जाती है। १०५° डिग्री में ज्वर तथा बहुत अधिक ज्वर होने पर १०६° या इससे भी अधिक गर्मी बढ़ जाती है।

३—जबड़ों के नीचे वा ऊपर कान के पास हाथ रखने से पशुओं की नाड़ी की गति का अनुभव तथा पूंछ की जड़ अथवा प्रथम पंजर (पलई) की पहली हड्डी का बिचला हिस्सा भी नाड़ी-परीक्षा की जगह है। साधारणतः पशुओं की नाड़ी की धड़कन ४५ से ५० वार तक प्रति मिनट होती है। बच्छे-बच्छी की नाड़ी ६२ से १३२ वार तक प्रति मिनट होती है। बीमारी होने पर नाड़ी की चाल में तेजी आ जाती है और अधिक दुर्बलता होने पर सुस्ती।

४—धुरंधर और अनुभवी चिकित्सकों की सम्मति है कि जो दवा मनुष्यों को गुण करती है वही पशुओं को भी गुण करती है केवल मात्रा का

अन्तर होता है, मनुष्योचित मात्रा से पशुओं की दवा की मात्रा १० से १५ गुना तक होती है।

बाघा

'बाघा' एक भयंकर व्याधि है। यदि इसका समुचित उपचार शीघ्र नहीं हो पावे तो यह पशु को शीघ्र ही समाप्त कर देता है। इसका मुख्य कारण अपचन, अजीर्ण आदि है। इस व्याधि को बिहार एवं संयुक्त प्रान्त की ग्रामीण जनता "बाघा" कहती है। बाघा मुख्यतः चार प्रकार का होता है। बाघा, फूलबाघा, डांड़बाघा तथा नेऊरबाघा। प्रत्येक प्रकार के बाघा का लक्षण नीचे लिखा जाता है।

बाघा—जिसमें पशु के कोख में अंगुली नहीं घसती।

फूलबाघा—पेट फूल जाता है और ढोल की तरह ठोकने से ढब ढब करता है।

डांड़बाघा—पिछला पैर हटाकर कमर तोड़ता है।

नेऊरबाघा—पशु की सब देह सिकुड़ जाती है।

चिकित्सा—१—बाघ का मांस, गोलमिर्च, पुरानी सेम की सोर (जड़), तीनों को बराबर बराबर मिलाकर रुपयाभर ले लें और १ छटांक गरम पानी के साथ मिलाकर पिला देवे।

२—कोदो की जड़, सेमर (सेमल) का मुसरा (जड़), खारी नमक, तीनों को एक एक भर लेकर पीसले तब गरम पानी के साथ पिला देना चाहिये, इससे दस्त बन्द होती है।

३—हल्दी का चूर्ण एकभर, सोंठ का चूर्ण एकभर, रेंड़ी का तेल आध पाव मिलाकर देना, यह दवा वायु गलाती है।

४—पीने की तमाखू, खारी नमक, हल्दी का बारीक चूर्ण तीनों बराबर बराबर लेकर सनहना (लोहे के पात्र में रखे हुए पानी) के पानी में घोलकर पिलादें। तीनों मिलाकर एक छटांक रहे। यह दवा पाचक है।

५—भतुवे (रकसवा कोहड़ा) का छिलका, भरसांय का अरहं (कीट,

झाला) और गुड़ प्रत्येक को समान मात्रा में लेकर गरम पानी के साथ दें, यह ठण्डी दवा है।

६—मेंऊड़ की पत्ती, नीम की छाल, सनाय की पत्ती, तीनों को एक एक छटांक लेकर एक सेर पानी में अच्छी तरह उबाले और जब आधा सेर पानी रह जाय तब छान ले और पशु को पिला दें। यह विशेषकर डांड़बाधा में लाभप्रद होता है।

७—कुकुरौंधा, चिचिड़ी की जड़, लाल मिर्च, खारी नमक, चारों को दो दो छटांक लेकर आधा सेर ठण्डे जल में मिलाकर पीसलें और फिर पशुओं को पिला दें। यह विशेषकर डांड़बाधा में लाभ पहुँचाती है।

८—तालमखाना जड़ सहित, रेंड़ी की गुद्दी, बांस की कोपल (करील या कल्ला) और खारी नमक, चारों को पाव पाव भर लेकर एक सेर जल में पकायें। जब जल आधा सेर के लगभग रह जाय तब छान लें और पशु को पिलादें। यह विशेषकर फूलबाधा में देना चाहिये। आठों दवाओं में पहली दवा (मांसवाली) छोड़कर सब दवायें सब तरह के बाधा बीमारी में लगती है किन्तु पहली दवा सिर्फ बाधा में ही दी जाती है।

गाभीन पशु को सब तरह के बाधा बीमारी में दी जाने वाली दवा—

१—भतुवा की गुद्दी चार भर, कोईं का फूल न मिले तो कमल का फूल, यदि कमल का फूल न मिले तो गुलाब का फूल दो भर, सब बारीक कूटकर आध पाव घी में चार भर चीनी मिलाकर, खिला देना चाहिये।

२—भतुवा का फूल, कोहड़े का फूल, नेनुआ का फूल, तिरोई का फूल, करेम का फूल, कचनार का फूल, बरें का फूल सातों को बराबर बराबर ठण्डा पानी के साथ पीसकर आध पाव चीनी मिलाकर देना चाहिये।

तिल बाढ़ा

लक्षण—पशु के अगले दोनों पंखे और छाती (हिका) कुछ फूल जाती है, चलने में बहुत परिश्रम लगता है, मुँह से गाज और लार गिरने

लगती है, साँस बहुत जल्दी जल्दी चलने लगती है। आँखें लाल हो जाती हैं, कान दोनों झुक जाते हैं, मुँह में हाथ डालने से अदहन के ऐसा गर्म हो जाता है, रोंवां धूमिल हो जाता है, तिल्वाढ़ा में कलेजे के ऊपर वित्ताभर खून जमकर कलेजा छू लेता है तो सर्प की लहर के तुल्य लहर आती है, चक्कर खाकर पशु गिर पड़ते हैं और मर जाते हैं।

चिकित्सा—१—कलेजा के ऊपर दाग देना, दागने से बीमारी शीघ्र हट जायगी।

२—पांचभर हल्दी का बारीक चूर्ण, १ भर चूना, आधपाव पानी में घोलकर देना।

३—एक छटांक काली तिल, एकभर गोल मिर्च, एक भर काला नमक एक सेर पानी में मिलाकर देना।

४—बबूल की छाल, नीम की छाल, जामुन की छाल, पाव पाव भर लेकर दो सेर पानी में बैठा देवे, आधा पानी जल जावे तो उतार कर आध पाव खारी नमक मिलाकर दो खुराक बनाकर एक खुराक शाम और एक खुराक सुबह देना। ये चारों औषधियाँ तिल्वाढ़ा में तथा वात रोग में भी गुण करती हैं, परन्तु वात रोग में जहाँ फूलता है वहीं दागा जाता है।

वात रोग

लक्षण—घुटना और घुट्टी फूल जाती है, छाती में दर्द होती है, पशु लँगड़ाने लगते हैं, देह ढीली कर देते हैं।

चिकित्सा—१—१ छटांक सोंठ, १ छटांक हल्दी, १ छटांक सरसों, १ भर गोल मिर्च, आध पाव गुड़ इन सबों को आधसेर पानी में पीसकर गरम करके दो खुराक बनाकर देना।

२—पुराना रेंड़ की जड़ (सोर) पाव भर, भटकटैया का फल १ छटांक, सेंधा नमक १ भर, भेड़ी की लेंड़ी (गोबर) दो भर उबटन की तरह पीसकर एक में पका कर रख देवे, उसी में से लेकर फूले हुए पर लेप चढ़ाना चाहिये।

३—चिचिढ़ो की पत्ती जड़ आदि, बरियार की जड़, गुंजेड़ा (गोनर) की जड़, पाव पाव भर लेकर आधसेर पानी में उबालकर छान के १ छटांक खारी नमक मिलाकर गरम गरम ही देना।

४—अजवाइन पावभर, खारा नमक १ भर, पावभर गोमूत्र में पीसकर गरम करके पशु के शरीर पर लेप करे।

चेचक (माता)

इस संक्रामक बीमारी में शरीर की गर्मी १०५° से १०७° डिग्री तक पहुँच जाती है। शरीर में फुनसी निकलने पर गर्मी कम होने लगती है। नाड़ी की धड़कन का परिमाण प्रति मिनट ६०° से १२०° तक हो जाता है।

लक्षणः—सब देह में रोयां फूट जाता है, चकोटा उठता है, रोवां धूमिल हो जाता है। पानी पीने का चाव बहुत होता है, पेट झरने लगता है, खाना छोड़ देते हैं—इसमें पानी थोड़ा थोड़ा पिलाना चाहिये।

चिकित्सा—१—आध सेर गाय के मठा में, पावभर नीम की पत्तियों को पीसकर पिलाना।

२—बिना फूलवाली कराटकारी (भटकटैया, रेंगनी) की जड़ के चार टुकड़े और २१ दाना काली मिर्च खूब बारीक पीसकर पशु को खिला दिया जाय तो चेचक का विष पशु के शरीर में घुस नहीं सकता। रोगी पशु के लिये भी गुणकारी है।

३—कच्ची हल्दी ५ भर, ५ भर गुड़ के साथ दिन में तीन बार चार पाँच दिन लगातार पशु को खिलाया जाय तो चेचक रोग होने का डर नहीं रहता।

खुरहा

परिचय तथा लक्षण—इस रोग को खुरहा, खंगवा, मुंहपगा आदि कहते हैं। इस रोग में पशु के मुँह और खुर में घाव हो जाते हैं, जिससे पशु चारा दाना छोड़ देता है और लँगड़ाने लगता है-तथा निर्बल हो

जाता है। असावधानी करने से उनमें कीड़े पड़ जाते हैं और पशु खराब हो जाता है। एक पशु को रोग होते ही हवा के द्वारा दूसरे पशुओं में जल्दी ही यह बीमारी फैल जाती है। यह बीमारी बारहो महीने हुआ करती है। इससे लोगों को चाहिये कि एक भी पशु को रोग हो जाने पर तुरत ही उपाय करें।

चिकित्सा—१—जामुन की छाल आध सेर, बबूल की छाल आधसेर १ घड़ा पानी में उबालकर छान लें और ठण्डा होने पर १ भर फिटकरी मिलाकर पशु के मुँह तथा पैर धोवें।

२—एक सेर नीम के छाल को १ घड़ेभर जल में उबालकर छान ले और फिर एक भर फिटकिरी मिलाकर पशु के मुँह, पैर को धोवे।

३—सलई (जंगल में सलई का एक पेड़ होता है, जिससे सलाई की काँटी इत्यादि बनती है) की छाल १ सेर लेकर एक घड़े पानी में उबालकर मुँह, पैर धोवे।

४—एक सेर अमरूद की छाल को एक घड़ेभर जल में उबालकर छान ले और फिर एकभर फिटकिरी मिलाकर पशु के मुँह, पैर धोवें।

५—कीड़े पड़ जायँ तो ममरी पानी में उबालकर उसी पानी से पैर धोवे।

६—जैता के पत्ते को पीस कर घाव पर थोप देने से कीड़े मर जाते हैं और घाव भी अच्छा हो जाता है।

७—फेनाइल का तेल लगाने से भी कीड़े मर जाते हैं।

८—तेजबल की लकड़ी को खुर और मुख में स्पर्श करा देने से भी खुरहा अच्छा हो जाता है।

९—किसी पास के गाँव में "खुरहा" की बीमारी सुनने पर दूसरे गाँव-वालों को चाहिये कि अपने अपने पशुशालाओं में रविवार या मंगलवार को कछुए की खोपड़ी में घी की बत्ती अथवा तीसी के तेल की बत्ती जलाकर पशुशाला के सब कमरे में घुमा दें, इस टोटका के करने से उस गाँव में 'खुरहा' बीमारी नहीं आवेगी।

ज्वर तथा प्रसूत ज्वर

गधपुरना (सफेद पुनर्नवा) को आधपाव लेकर आधसेर जल में उबाले, आधा जल रह जावे तो उतारकर पिलावे। मलेरिया ज्वर में—आधसेर मट-कटैया को एक सेर जल में औंटावे, जब चौथाई रह जाय तो उतारकर छान दे और ठण्डा करके पिलावे।

प्रसूत ज्वर में दवाः—बच्चा होने के बाद एक बोतल देशी शराब पिलाना। इसके बाद जामुन, अमरूद के आध आध पाव छाल को पावभर जल में उबाले, जब आधा रह जाय तो उतारकर दो खुराक बनाकर देना।

हरिणवाह (पागलपन)

कारणः—बहुत अधिक पीटे जाने तथा डराये जाने के कारण पशुओं को यह रोग हो जाया करता है; जैसे सींग के टूट जाने, सिर में मारी चोट लगने आदि से।

लक्षण—हरिणवाह में पशु सींग से और पैर से मिट्टी खुरेदने लगते हैं, इधर उधर बहुत जोर से दौड़ते तथा हों, हों करते हैं, देह की उनको सुधि नहीं रहती, आँखें लाल हो जाती हैं, जानवर के ऊपर दौड़ जाते और घुमः ड़ने लगते हैं।

चिकित्सा—१—साफ कपड़ा तीसी के तेल में भिंगो कर उसको दोनों सींगों में लपेटकर सलाई से बार देना चाहिये, जलता रहे, जब उसकी सींगों में चोट पहुँच जाय तो अग्नि गिरा देनी चाहिये।

२—उजली दूब, उजले मदार का कोंपल या फूल, दोनों में से कोई एक, एक छटाँक रहे और हरिन की सींग दो भर रगड़ के उसमें २१ दाना गोलमिर्च मिलाकर देना चाहिये।

३—दूधिया घास १ छटाँक, बकरी का दूध १ छटाँक, चन्दन दो भर, बर (बट) का दूध दो भर, मिश्री दो भर, सब एक में मिलाकर पीस देवे। या केवल असली मलयागिर चन्दन घिसकर आधसेर पानी में पिला देने से आश्चर्यजनक लाभ होता है और अत्यन्त शीघ्र पशु आरोग्य हो जाता है।

४—राढ़ी (काँस) की ऊख (ऊपरी भाग), सरपत की जड़, ऊख की जड़, नागरमोथा चारों को आध आध पाव एक सेर पानी में पीसकर पाव भर गुड़ में मिलाकर देवें। औषधियों के तुरत न मिलने पर पशु के सिर पर घड़े के घड़े पानी डालना चाहिये, इसके बाद नीचे लिखे किसी एक जुलाब को दे देना चाहिये—१—जमालगोटे का तेल १० बूंद और तीसी का तेल १ सेर दोनों को मिलाकर पशु को पिला दें। इससे पशु को एक दस्त होगा और मूर्च्छा अच्छी हो जायगी। २—चावल के १ सेर माँड़ के साथ आध सेर नमक घोलकर पशु को पिला दें।

दमाँ

कारण—अधिक परिश्रम के कारण श्वास उखड़ जाता है, जिससे यह रोग हो जाता है।

लक्षण—जो पशु हाँसते हों, हकर हकर करते हों, ऊपर को साँस चढ़ती हो उसीको दमाँ कहते हैं।

चिकित्सा—१—सोंठ, हल्दी, मंगरैला, अजवाईन आध आध पाव, ताड़ की छाल सेरभर, सब को एक में कूटकर पावभर घी लेकर सब में खूब मलकर फिर उसमें पावभर सेंधा नमक मिलाकर किसी बर्तन में रख देना, उसी में से आधपाव लेकर गरम पानी के साथ देना।

२—हाँफ बँवर (लत्तर), आकाश बँवर, बँवर तीनों एक एक छटाँक पीसकर खारा नमक दो भर मिलाकर दिया करें।

३—प्याज पावभर पीसकर १ छटाँक घी में मिलाकर देना चाहिये।

भटियारी

लक्षण—सब देह फूलने लगती है, छूनेपर बजर बजर करता है, उसीको भटियारी कहते हैं।

चिकित्सा—१—फूलने (जहाँ फूल गया हो) में पाछ मार देना कि जिसमें हवा और खून निकले।

२—बेमउट (बमई) की मिट्टी सब देहमें लगा देनी चाहिये ।

३—हल्दी एक भर, सोंठ एक भर, कड़ुवा तेल दो भर, खाँड़का शीरा आध पाव सब एक में मिलाकर देना ।

झुरिया

कारण—मस्तक में गर्मी पहुँचने से यह रोग होता है ।

लक्षण—पशु दुबले होते जाते हैं, खुराक बन्द हो जाती है, आँख की दोनों पुटपुटी बैठ जाती हैं, चलने में पैर फँसने लगते हैं, कमजोरी बहुत हो जाती है ।

चिकित्सा—१—लौका का बतिया (छोटाफल), भतुवा का बतिया, कमल की जड़, कुई की जड़ चारों को एक-एक छटाँक पीसकर १ छटाँक चीनी मिलाकर पिलाया जाय ।

२—पथली (लाल पुनर्नवा या गदंह लोटन) की जड़, गधपुरना (सफेद पुनर्नवा) की जड़, तालमखाना की जड़, बरियार की जड़, चारों को पत्ती सहित एक-एक छटाँक लेकर १ छटाँक चीनी मिलाकर पिलाया जाय ।

३—पीपल की पत्ती, जामुन का टूसा (कोंपल), पकड़ी का टूसा, मदार का टूसा, चारों को एक एक छटाँक एकभर खारा नमक देकर पिलाया जाय ।

४—सीयरुवा, गूलर का फल दो दो सेर दोनों को एक में कूटकर ८ सेर मट्ठा में डालकर एक बर्तन में रख देना, उसमें सेंधा नमक सेर भर छोड़ देना । उसी में से आध सेर देना चाहिये । यह दवा जो पशु झार (जेर) खा जाते हैं उनको भी लाभ पहुँचाती है ।

अन्तरदाह

लक्षण—पशु एकदम सूखता जाय, कोयर (भोजन) छोड़ दे, सुस्त रहे, उसी को अन्तरदाह कहते हैं ।

चिकित्सा—१—कमल की जड़ का फेदा (कन्द), केला की जड़ का फेदा, सूरन, पांच पांच रुपया भर लेकर पीसऊे और जो भाग नहीं पिसा

गया हो उसको हाथ से निकाल कर फेंकदे और हींग एक मटर भर मिलाकर पिलावे ।

२—छोटी इलायची चवन्नी भर, कागजी नीबू का रस १ भर, शहद १ भर, गाय का मट्ठा आध सेर एक में मिलाकर देना ।

३—दो सेर ताड़ का बाल, सेर भर चिचिड़ी की जड़, पाव भर अजवाइन, पाव भर मंगरैला, पाव भर सोंठ उजरकी, सोंठ वैतला दो रूपयाभर इन सब दवाओं को कूटकर चूर्ण करे, सेर भर नमक मिलाकर आध सेर घी में मल करके एक नई हंड़िया में रख देवे, उसमें से आध आध पाव की खुराक बना कर देवे । यह दवा झुरिया और अन्तरदाह दोनों में दी जाती है ।

वघचोंड़ी

लक्षण—पशु पैर तोड़कर बैठते हैं, उठते हैं तो अंगडाई लेते हैं, फिर बैठते हैं, जमीन में पूँछ पीटते हैं, पूँछ को ऐंठते हैं, आँखें लाल लाल करते हैं, उठते हैं तो बड़ी जोर से दौड़ते हैं, फिर बैठ जाते हैं, जमीन में छपक जाते हैं और आदमी पर झपटते हैं ।

चिकित्सा—१—तांबे का पैसा, सुतुही, कौड़ी तीनों अधेला अधेला भर रगड़ कर उसमें आध पाव शहद मिला कर देना चाहिये ।

२—चांदी-भस्म, कद्दू के फूल की भस्म, पीतल भस्म तीनों दो दो आनाभर आधपाव शहद में मिलाकर देना ।

३—मूँगा भस्म, चंदन भस्म, दो दो आनाभर, पावभर घी में मिलाकर देना ।

मृगी

लक्षण—पशु गिर पड़ते हैं, देह पीटने लगते हैं, मुख से गाज फेंकने लगते हैं; मालूम होता है कि अब मर जायँगे ।

चिकित्सा—१—उजरकी घुंघुची, उजरकी सरसों, उजरकी रहर, चन्दन बराबर बराबर लेकर चूर्ण करे और एक भर चूर्ण आध पाव गाय के घी में

सब दवाओं को मिलाकर पीतल के बर्तन में एक पहर रविवार या मंगलवार को स्नान करने के पश्चात् उसे खूब घोंटे और एक शीशी में रख दे। जब मृगी आवे तो एक एक बूंद दोनों आँखों में लगा देवे।

२—सरपत की जड़, नरकट की जड़, राढ़ी (कांस) की जड़, खश, कमल की जड़, कुईं की जड़ सब एक एक छटांक और दो रुपया भर गोल मिर्च मिलाकर पीस देवे और पाव भर घी में मिला कर जब मृगी आये तो पिलावे।

जोंकी

लक्षण—जिस पशु को जोंकी लग जाती है उस पशु का पेट झरता है, झरते २ आँख से कींचड़ बहने लगता है, नीचे को सिर किये हुए पशु चलते हैं, मैंव जलन से हर समय पानी में कूदे रहते हैं, आँखें कुछ लाल हो जाती हैं, चारा थोड़ा थोड़ा खाते हैं, कभी खाते हैं, कभी नहीं, पानी बहुत कम पीते हैं, व्याकुल रहते हैं।

चिकित्सा—१—खारा नमक एक भर, लोहार के यहाँ का लोहखार (लोहचूर्ण) रुपया भर लेकर कूट करके आधपाव देशी शराब में डालकर रोगी पशु को दिया करे।

डेंकरुआ

लक्षण—पशु डें, डें करता है, जब तब खाँसता है, उसी को डेंकरुआ कहते हैं।

चिकित्सा—१—गला में डेंकरुआ बाँध देना चाहिये। डेंकरुआ एक जड़ी है जो पशु के पेट में होती है, यह चमारों के यहाँ मिलती है।

२—उजला सूरन, केवाच का फल दोनों को जलाकर खारा नमक और हल्दी चारों को एक-एकभर मिलाकर गरम पानी के साथ देना।

गर्मी की बीमारी

लक्षण—पेशाब कड़ुआ तेल के ऐसा और थोड़ा थोड़ा होता है, रुक

जाता है, कड़क ज्यादा होता है, मवाद के साथ टोप टोप पेशाब होता है।

चिकित्सा—हंसराज जड़ी को पीसकर मिश्री मिलाकर पशु और आदमी को किसी तरह की गर्मी हो तो पिला देना चाहिये। लाभ शीघ्र करता है। हंसराज जड़ी की पत्ती इमली की पत्ती के समान होता है, उसके नीचे की डण्टी गेहुअन सर्प के पोवा के समान होती है।

अढ़या

लक्षण—मुँह पसीजने लगता है, लार गिरने लगता है, नाक सिकुड़ने लगती है, लँगड़ाते हैं, देह सिकुड़ जाती है, कुछ स्वाँस लेते समय बैठ जाते हैं; उसी को अढ़यां कहते हैं। इस बीमारी की अवधि अढ़ाई दिन से अधिक नहीं है। दवा—मतुवा (रकसवा कोहड़ा) की गुद्दी और चीनी मिलाकर देना चाहिये, यदि मतुवा की गुद्दी न मिले तो खश को लेकर चीनी में एक लोटा शर्बत बनाकर देना चाहिये।

लकवा

चिकित्सा—१—लकवा बीमारी में अदरख (पीसा हुआ) दो रुपयाभर, देशी शराब पाँचभर और भूना हुआ तलाब हींग अठन्नीभर—इन सबको मिलाकर पिलाना यह एक मात्रा है दिन में चार-पाँच बार एक सप्ताह पिलावे।

२—कुचले का अर्क २० बूद आधसेर ठण्डे जल में मिलाकर पिलाना सुबह, शाम। नीम के पत्तों को उबालकर उसमें नमक मिला "सुन्न" स्थान पर मलना।

३—एक छटाँक सरसों पीसकर १ छटाँक गर्म जल में मिला सुन्न स्थान पर लेप करे।

४—शरीर को गर्म रखना चाहिये और लकवा मारे हुए स्थान पर मीठे तेल में कपूर मिलाकर मालिश करना चाहिये।

५—आधी बोतल शराब में एक छटाँक सोंठ का बारीक चूर्ण और एकभर कपूर मिलाकर प्रतिदिन पिलाना चाहिये।

बवासीर खूनी या बादी

"ॐ मोन्ड्रो ॐ" मन्त्र को ५०० जप करके सिद्धि कर ले। रेसम के डोरा या लाल डोरा (तागा) में सात गाँठ गठियो दे प्रति गाँठ पर तीन तीन बार पढ़कर फूँके। मनुष्य के बायें गोड़ के अँगूठा में लपेट दे। [illegible] बायें गोड़ में बाँध देवे ३१ दिन में बवासीर अच्छा हो जायगा।

चमक या साल

भड़भांड़ें के सोर का छाल उतार कर जहाँ दर्द हो दबाने से दर्द तुरत अच्छा हो जाता है।

टाँड़ा तथा झनका बीमारी

टाड़ा तथा झनका में चारों खुँटी पर गुल (दाग) देना चाहिये और उसके घुटना के पास जो गहरा भाग रहता है उसी नस पर गुल दे देना चाहिये टांड़ा तथा झनका छूट जाता है।

जहरबाद

चिकित्सा १—लाल मिर्च, नागफनी, चिलबिल भैंस के दही में पीसकर जहरबाद पर थोपा जायगा।

२—जहरबाद के दो अँगुल चारो तरफ दाग देना चाहिये।

३—हँईसा (हींस) की जड़, लाल मिर्च भैंस के दही में पीसकर जहरबाद पर थोप देना चाहिये यदि हँईसा का सोर न मिले तो दही में लाल मिर्च पीस कर लगाना चाहिये।

४—कान के नीचे जाबड़े तथा गला तक एक तरफ फूला हुआ हो और छूने से गर्म मालूम हो तो उसकी दूसरी तरफ यानी बायें फूला हो तो दहिनी तरफ और दाहिने फूला हो तो बायीं तरफ पीपल की पत्ती में घी लगाकर साट दे। इसके बाद दवा जिस ओर लगाई गई हो उसी ओर फूल जायगा और धीरे धीरे रोग छूट जायगा।

आँव (आम) पड़ जाना या रक्तामाशय अथवा नाक, कान, मुख से खून गिरना

परिचय—इस रोग के कई नाम हैं, जैसे आंव पड़ जाना, रक्तामाशय, पेचिश, मल पड़ जाना या दस्त में खून आना, मरोड़ आदि।

कारण—अधिक सर्दी, गर्मी, परिश्रम करने तथा गन्दा पानी पीने से अथवा कठोर पदार्थ खाने से यह रोग होता है। दस्त बहुत होने से तथा दूध का सहसा बन्द हो जाने से भी यह रोग होता है।

लक्षण—इस रोग में पशु को बहुत जोर करने पर थोड़ा सा दस्त होता है और उस गोबर के साथ खून निकलता है तथा गोबर पतला होता है। पशु कांखते हैं, रोवाँ धूमिल हो जाता है, मुख ठण्ढा रहता है और पशु काँपते हैं। अधिक जोर लगाने से मलद्वार का भीतरी हिस्सा बाहर निकल आता है।

चिकित्सा १—बबूल की पत्ती, सीसो की पत्ती, बेल (श्रीफल) की पत्ती आधा आधा पाव तीनों को आधा सेर गाय के मट्ठा अथवा पुराना चावल के धोवन में पीसकर चार आना भर जीरा की बुकनी मिलाकर पशु को पिलाना चाहिये।

२—बबूल, सीसो, बेल इन तीनों में किसी दो के पत्तियों को, अथवा एक पत्ती को भी गाय के मट्ठा या पुराना चावल के धोवन में पीसकर देने से भी लाभ होता है।

३—भांग, गुड़, करमहरा का लासा (कतीरा) तीनों को दो दो रुपया भर १ छटांक चीनी में मिलाकर देना चाहिये।

नासूर, भगन्दर या योनि भगन्दर

चिकित्सा—१—सिमरिफ को (कूट महीन कर) चवन्नीभर, घी आधपाव, मोम १ छटांक आग पर पका कर ठण्ढा करके एक शीशी में रख देना और काम पड़े पर एक कपड़ा की पट्टी पर मलहम पोत (लेप) उस

पीसकर नाक में डालकर गाय के पूँछ के बार (बाल) से नाक में घुमावें। करीब तीन, चार रविवार, मंगलवार तक ऐसा करना चाहिये।

ढाल या किलनी पड़ना

दवा—तीन चार सेर पानी में आँवाँ के राख को घोलकर पशु के सब देह में खूब लगा दे और आधा घण्टा धूप में खड़ा रहने दे इसके बाद दो तीन दिन तक तालाब में खूब मलकर धोना चाहिये।

पिच्ची (जुलपिची) उछलना

पशु के शरीर में बड़े-बड़े चकत्ते (चकोटा) पड़ जाते हैं और खाज आती है।

दवा—नीबावट (नीम का पानी) एक सप्ताह तक पिलाना चाहिये।

जीभ पर काँटा हो जाना

दवा १—तेज चाकू से जीभ के ऊपर काँटे को तराश दे (ठीक उसी तरह जिस तरह मनुष्य अपनी जीभ को दातून से साफ करता है) और उसपर सूखी हल्दी का बारीक चूर्ण छिड़क दे। २—हसुआ को गरम कर काँटे के ऊपर से किसी गुणी से खिचवा ले और उसपर हल्दी और नैनू मिलाकर लगा दे।

जीभी (खेखसा)

पशु के जीभ के अगल-बगल चार अंगुल के लगभग छोटे छोटे काले काले दानें निकल आते हैं इससे खाने में पशु को तकलीफ होती है।

दवा—पशु को गिराकर जीभ निकालकर सुई से नस को तोड़ देना चाहिये तथा नमक भुरभुरा दें जिससे और भी खून गिरने लगता है। इसी तरह से ख़राब खून बाहर हो जाता है। चार पाँच मिनट के बाद ही हल्दी का बारीक चूर्ण उस नस के पास लगा दे, जिससे खून न निकले।

खौरा

फुंसी सब देह में हो जाती है तथा बाल झड़ जाता है।

दवा—सनहना का पानी चार-पाँच दरका एक सप्ताह तक देना चाहिये।

ढाँसना

दवा—कुत्ते का हाड़ पशु के गर्दन में दो-चार रविवार या मंगलवार के छुआ देना चाहिये। यदि इससे न अच्छा हो तो रविवार या मंगलवार को बायें हाथ से डोर से एक ही हाथ द्वारा पानी खींचा जाय तथा पथली में पानी को रखा जाय और भोर में पिलाया जाय।

बलवर्द्धक दवा

सरसों पाँच सेर, नमक सात सेर, हल्दी अढ़ाई सेर, एक जोड़ी टूटा हुआ जूता (टूटे जूता को आग पर रख दे जब आधा जल जाय तो उसको मलकर उखली में खूब बारीक कर दो) सब एक में मिलाकर रख दो और एक मुट्ठा प्रत्येक पशुको दस बजे दिन में दे दें। इससे खूब भूख लगेगी तथा पानी पीने का चाव रहेगा।

फार लगना

बैल को हल चलते समय फार लग जाता है जिससे घाव हो जाता है। बैल लँगड़ाने लगता है।

दवा १—कल्छुल को गरम कर फार लगे स्थान पर छुआना, तत्पश्चात् कडु तेल में लहसुन को खूब उबालकर घाव लगे स्थान पर गिरा दे।

२—दो तीन टुकड़े ईंट को आग में गरम कर लाल करे, तत्पश्चात् बैलको पटक कर ईंटों पर मट्ठा इस तरह गिरावे कि उसका भांप उसी घाव पर लगे।

———

पुस्तक प्राप्ति-स्थान

१—बाबू दशरथसिंह वकील, सासाराम, जिला शाहाबाद।

२—कैलासपतिसिंह केयर ऑफ संकठा प्रसाद भोलानाथ, चौक बनारस (यू० पी०)।

३—मुंशी शंकरलाल अराजनवीस, म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस।